इन्टरव्यू ३२

प्र: आपका नाम क्या है ?

ज: मेरा नाम मोहम्मद काजिम है उर्फ प्यारे लाल।

प्र: आपकी उम्र कितनी है ?

ज: मेरी उम्र लगभग 45 साल है।

प्र: आप का ये क्या काम है इसके बारे में बताइये ?
ज: हमारा काम है साड़ी फिनीशिंग का, ऐसा है कि इसमें शाइनिंग लाने के लिए इसके ऊपर में फिनिशिंग की जाती है।

प्र: जब साड़ी बन जाती है ?
ज: जब साड़ी बन जाती है उसके बाद परचेजिंग (खरीदना) होती है आढ़त से परचेज करने वाला जो दुकानदार है, वो पॉलिश करवाता है। वो फिनिशिंग के लिए माल सप्लाई करता है, हम लोगों को फिनिशिंग के लिए देते हैं, तो हम लोग फिनिशिंग करके फिर कमप्लिट करके फिर यहां से देते हैं।

प्र: फिर आप लोग चौक में देते हैं ?
ज: हां, जहां से लाते है फिर वहीं आढ़त पर पहुंचा देते हैं।

प्र: फिनिशिंग के बाद ही बिकती होगी ?
ज: जी, फिनिशिंग के बाद तो है रिटेलर के वाले अपना बेचते हैं, जैसे रिटेलर वाले माल दिये आढ़त पर, माल खरीदे, खरीदने के बाद उन्होंने कहा फिनिशिंग करवा दिजिये हमारी, इसमें जो भी काम है कटिंग वगैरह फिनिशिंग का सारा काम वो सब करते है हम और सबसे पहला काम तो उसमें कलणरिंग होती है, रूलर चलाया जाता है कि जरी इसका कपड़ा एक बराबर हो जाय, इसके बाद हम लोग इसपे स्प्रे चरक करते हैं, चरक करने के बाद जो इसपे सुखवाते है, चार घण्टा, पांच घण्टा सुखाने में लगता है, मौसम खटान है, तो कोयले की आवश्यकता है, बिजली की आवश्यकता पड़ती है, और मदां तो समस्या सबसे बड़ी है कि बिजली न मिलने के कारण हर काम में बाधा है, हर काम में बाधा पड़ता है।

प्र: हां पड़ता ही होगा ?
ज: पानी नहीं बिजली नहीं हम लोग का बस काम ही यही है, फिनिशिंग के लिए पानी चाहिए, तभी कलफ बनेगा, मेटेरियल बनेगा, उसके बाद जो है, फिर हम मेहनत करके अपने हाथ से काम करते हैं।

प्र: तो आपको काम मिलता रहता है लगातार ?
ज: नहीं, मन्दा आ जाता है तो काम डाउन हो जाता है बिलकुल अभी जैसे लगन पड़ रही है तो काम चल रहा है और फिर उसके बाद जहां लगन खत्म हुई, मार्केट डाउन हो जाती है, कोई मैं नही है कि मतलब मुकम्मल रेगुलर इतना माल होना ही है।

प्र: अच्छा जरूरी नहीं है कि हमेशा काम मिलता ही रहे ?
ज: हां।

प्र: तो ये आप के आस-पास और जो लोग रहते हैं, सब लोग फिनिशिंग का काम करते हैं ?
ज: नहीं, आगे और लोग भी हैं, यहां तीन चार कारखाना चल रहा है।

प्र: ये पूरे नाटी इमली में तीन-चार कारखाना है ?
ज: हां चार करघा है फिनिशिंग का सभी लोग कोई डाई करता है कोई फिनिशिंग करता है कोई जो है उसका

कागज-प्रेस पैकिंग वगैरह करता है, ऐसा भी है, कमप्लिट लास्ट हमारे यहां आता है फिनिशिंग के लिए।

प्र: एक महीने में कितना आर्डर मिल जाता होगा, एक महिने या एक हफ्ते में ?
ज: इसका कोई मैं नहीं है।

प्र: नहीं जैसे जब लगन चल रहा है ?
ज: लगन जब चल रहा है अब काम लिया होलसेलर आया व्यापारी सौ साड़ी खरीदा, तो सौ साड़ी हमको मिला और 10 साड़ी खरीदा तो 10 ही साड़ी हमको फिनिशिंग के लिए मिलेगा, तो हमारी किस्मत के ऊपर है।

प्र: अच्छा बनारसी साड़ी का धंधा किस तरह से चल रहा है, मन्दा चल रहा है, अच्छा चल रहा है, उसका भी असर होता होगा ?
ज: हां बहुत ज्यादा असर पड़ता है, उसका खासकर हम पर बहुत ज्यादा पड़ता है।

प्र: अच्छा आपका ये पुश्तैनी काम है या पहले आप बुनकारी से इसमें आये हैं ?
ज: नहीं ये पुश्तैनी है हमारा बाप दादा के जमाने से चला आ रहा है। हमारे दादा जी के उस जमाने से चला आ रहा है।

प्र: तो आपकी इसमें आमदनी कितनी हो जाती है, एक महीने का अगर बोले तो लगभग कितनी ?
ज: (बीबी का आमदनी खाय भर में निकले थे और का) मेहनत कर के बस, बाल बच्चों को लेकर मेहनत करते हैं, बस खाने भर का हो जाता है, बस यही बहुत बड़ा है, अल्ला का शुक्र है।

प्र: अच्छा जैसे वो बुनकारी का काम होता है तो उसमें घर की सब औरतें भी नली भरने का काम में लगी रहती है तो इस वाले काम में भी घर भर लोग लगते है यानि बच्चे बीवी सभी ?
ज: हां सभी लोग, सब लगे रहते है इसमें।

प्र: (पत्नी से) आपका क्या काम होता होगा इसमें ?
ज: (पति) हेल्परी का काम होता है इनका।

प्र: हेल्परी क्या होता है ?
ज: हेल्पर हेल्पर

प्र: अच्छा हेल्पर का ?
ज: हां अब जैसे हम काम कर रहे हैं, तो हमारे लिए लेबर चाहिए, और लेबर हम लोग रखे नही हैं, खुद मेहनत कर रहे हैं, बाल बच्चों को लेकर, पढ़ाना भी है लिखाना भी है उसी में सब है, बच्चे को पढ़ाना भी है, दस्तकारी भी सिखना है, फालतू खेलो मत बेटा, काम करो, जुड़े रहो हमसे, मछली के बच्चे को तैरना तो सिखाया नहीं जाता, जो इससे जुड़ा हुआ है, वो इससे जुड़ा ही है, वो भी सीख रहा है।

प्र: दो बच्चे हैं ?
ज: नहीं हमारे तो चार बच्ची चार बच्चा।

प्र: अच्छा ये बताइये आप तो बहुत साल से इस काम में लगे हैं तो अभी काम में गिरावट आयी है या बढ़ा है क्या है पिछले कई सालों में ?
ज: ऐसा है न कि सन 2000 में तो हम लोगों का बहुत डाउन गया सन 2001-02 में भी बिलकुल नॉरमल गया, अभी ये खिचड़ी के बाद से थोड़ा बहुत चालू हुआ है क्योंकि कारोबार तो मतलब हर तरीके से ठप पड़ा हुआ है माल उतारी नही हो रहा है। व्यापारी खरीद नहीं पा रहा है और उसके वजह से और भी डाउन हुआ है, बिजली की कमी के कारण खासकर डाउन हुआ है, बिजली नहीं है तो बिनने वाले करघा कहां से बिनेंगे क्योंकि बारीकी काम है उसमें, बिजली नहीं है किसी का करघा है, पूरे अंधेरे में है बगैर बिजली का करघा चल नहीं सकता।

प्र: जैसे कि आप बहुत साल से कर रहे हैं, तो जैसे बुनकर लोगों ने बताया कि पिछले साल से ज्यादा गिरावट आ गयी है इस धंधे में, तो आपको भी लगता है ऐसा कितने साल से आयी होगी ये गिरावट ?
ज: ये गिरावट लगभग हम समय रहे है कि जब देवगौड़ा की हुकुमत थी यहां, जब देवगौड़ा जी की हुकूमत थी उस समय से गिरावट आयी तो फिर अभी ऊपर नहीं आयी संभली नहीं फिर।

प्र: कारण क्या होगा इसका ?
ज: कारण ये है की रेशम पर प्रतिबन्ध लगा दिये हैं।

प्र: कहां में रेशम पर, मतलब निर्यात पर ?
ज: निर्यात पर, आयात पर, बंगलौर का जो रेशम है तो बंगलौर में रहेगा, विदेश का रेशम आयेगा नहीं, ऑटोमैटिक दाम बढ़ना ही बढ़ना है, फिर मदां वाले को मिलेगा नही तो निर्यात होगा? कभी नहीं कभी आगे बढ़ नही सकता। आप की परिस्थिति ये है कि रेशम मान लिया 1400 रुपया मिला है तो कारीगर की मजदूरी नहीं बढ़ रही है, मंहगाई चरम सीमा पर पहुंच गयी है, हर चीज का दाम बढ़ता ही जा रहा है, हर चीज का टैक्स बढ़ा रहा है, पानी का टैक्स बढ़ रहा है, कहां से अगला देगा, कमाने वाले एक ठो खाने वाले चार ठो उसमें मजदूरी भी नहीं पड़ता खा रही है, तो भुखमरी के कगार पर तो बुनकार आएगा।

प्र: आप लोग पर भी असर पड़ा ही होगा ?
ज: बिलकुल असर पड़ा है तीन साल चार साल हो गया, ये समझीये कि हम इसको नहीं पढ़वा सके, इतनी मेहनत कर रहे फिर भी।

प्र: आपके और भाई लोग भी इसी काम में लगे हैं ?
ज: हां और भाई लोग भी इसी काम में लगे हैं।

प्र: वो लोग भी यही आपके साथ ही रहते हैं ?
ज: नहीं सब लोगों का अलग-अलग है चार कारखाना है यहां, एक पिता जी से चार कारखाना हो गया, चार बच्चे है तो चार करघा अलग-अलग हेा गया, जब पिता के साथ थे तब उतने ही मेहनत करते थे, सभी लोग खा लेते थे, आज चार भाई अलग-अलग हो गये उतने ही इससे ज्यादा मेहनत कर रहे नही होता है, नही अट पा रहें हैं ये पोजीशन है।

प्र: अच्छा ये पावरलूम का कोई असर नहीं हुआ है इसपर ?
ज: पावरलूम का असर तो बहुत ज्यादा है इसलिए ज्यादा हे कि बिजली की खपत पावरलूम पर ज्यादा है।

प्र: पावरलूम की साड़िया तो पॉलिश होने के लिए आपके यहां आती होंगी ?
ज: हां।

प्र: तो आपके धन्धे पर तो उतना असर नहीं पड़ता होगा ?
ज: असर पड़ता है, उसमें क्या है कि क्लेरिंग हो गयी रहती है तो हमारे यहां पॉलिश के लिए आयेगी क्यों, भई शूटिंग-सर्टिंग हो रही है तो पॉलिश वाले के पास तो जायेगा नही, डाई वाले के पास जायेगा, डाई किया खाई किया, खाई करने के बाद फिर जो है कलेण्डर करा दिया उसके बाद भेज दिया सब काम तो मशीन का हो गया हाथ वाले काम तो रहें वही।

प्र: और पावरलूम वाले में फिनिशिंग की जरूरत नहीं होती है ?
ज: बहुत कम जरूरत पड़ती है कभी-कभी जब माल बिगड़ जाता है तभी जरूरत पड़ती है वरना नहीं।

प्र: तो हैण्डलूम जो डाउन हो रहा है उसका असर आप पर भी है ?
ज: बिलकुल हमारे ऊपर भी असर पड़ रहा है बताय रहे है न कि हम लोग खुदी परेशान है उसमें, अब इतनी मेहनत कर रहे बाल बच्चों को लेकर परिवार लेकर परेशान हैं कोई लेबर तो हम लोग रखे नहीं हैं।

प्र: आप अपने बाल-बच्चों को भी इसी काम में लगाना चाहते हैं ?
ज: नहीं प्रयास तो कर रहे हें, आगे के लिए कि मतलब दूसरा धंधा देखे अभी तक तो जब तक चल रहा है जब हम मेहनत कर रहे हैं, बच्चे तो उतनी मेहनत नही कर पायेंगे सन नब्बे के बाद में लड़के बच्चे जितने हैं, उतनी मेहनत नहीं कर पायेंगे क्योंकि इतनी ताकत नहीं है शरीर में आज कल किसमें ताकत है थोड़ा सा ठण्ड पड़ा बर्दाशत नहीं कर पाते हैं, ये परिस्थिति है, और पहले के जमाने के लोग 70 साल 80 साल 90 साल तक जीते थे, आज तो 60 साल जीना मुश्किल है।

प्र: यहां पर कोई बुनकर समिति भी है ?
ज: बुनकर समिति भी है, ये सिल्क वीवर्स कॉपरेटिव सोसाइटी लिमिटेड।

प्र: ये पूरा बनारस के लेवल पर है ?
ज: नहीं सिर्फ बुनकरों के लिए है ये बुनकर कॉलोनी जो क्षेत्र है यहां 8 एकड़ जमीन में, तो उनकी समिति एक बनी हुई है सिल्क वीवर्स कॉपरेटिव सोसाइटी लिमिटेड तो उसके प्रेसीडेंट जो हैं मोहम्मद उदरीस साहब है, अभी है, आगे सर अब्दुर रहमान थे वो स्वर्गीय हो गये।

प्र: वो लोग क्या काम करते है ?
ज: वो लोग बुनकारिये करते है।

प्र: नहीं मतलब समिति बनाये है तो बुनकरों के हित की थी कुछ करते होंगे ?
ज: बुनकरों के हित के लिए जो भी कार्य करना चाहें तो उनको फेसिलिटी नहीं मिल पा रही है।

प्र: जैसे क्या ?
ज: जैसे की है उनको चाहिए एडिअई हैण्डलूम वगैरह फेसिलिटी देती है, तो उनको वहां से फेसिलिटी नहीं मिल पा रही है।

प्र: क्यों नहीं मिल पा रही कारण क्या है ?
ज: कारण ये है कि ये कहते है हमारा जो प्रोजेक्ट है हमको दिलवाया जाय, तो वो कहते है आप कार्य क्या करते हैं, आपके पास है क्या.... जहां के तहां पड़े हुए है, उनके लिए तो आप गरीब थोड़ी है उनकी नजर में जो व्यापार कर रहे हैं, एक्सपोर्ट-इम्पोर्ट कर रहे हैं वो गरीब दिखा रहे हैं, ये है एडीआई हैण्डलूम के नजर में ।

प्र: तो बुनकर लोग उस समिति से जुड़े हुए है ?
ज: समिति से जुड़े हुए है मेम्बर है उसके।

प्र: पर हम लोग तो अभी जितने लोगों से बात करके आ रहे कोई जानता ही नहीं समिति के बारे मे ?
ज: यह समिति के बारे में क्यों नहीं जानेंगे हम जो गैर हलाकी टाइप से आये हैं जैसे बुनकर समिति क्वाटर का है उस समय, फिलहाल उनका मुकदमा चल रहा है हाईकोर्ट में मांग कर रहे कि हमारी कीमत जो पुरानी बताई है वही कीमत दिया जाय।

प्र: कौन सी कीमत, मतलब किस चीज की ?
ज: पलेन बुनकर क्वार्टर की।

प्र: ये बुनकर क्वार्टर मिले हुए है लोगों को ?
ज: जी।

प्र: जो नाटी इमली में रह रहे हैं, वो तो उनका अपना ही है ?
ज: हां।

प्र: वो तो बुनकर कॉलोनी है नहीं ?
ज: जी हां, ये बुनकर कॉलोनी है, इधर से बुनकर कॉलोनी शुरू होती है।

प्र: अच्छा तो ये बुनकरों के लिए है ?
ज: जी हां।

प्र: इसमें बुनकर लोग ही रहते हैं ?
ज: जी, इसमें बुनकर ही लोग रहते है केवल वरना और दूसरे कोई नहीं है, इसमें।

प्र: आप क्या बता रहे थे, हाईकोर्ट से क्या मामला चल रहा है ?
ज: हाईकोर्ट से मामला चल रहा है कि मतलब हमारा जो एग्रीमेन्ट हुआ है, उस एग्रीमेन्ट पर हमारा फैसला दिया जाय तो वहां फैसला अभी तक मिल नहीं रहा है क्योंकि पूंजीपति लें हुए हैं।

प्र: एग्रीमेन्ट क्या हुआ था ?
ज: एग्रीमेन्ट ये हुआ था कि आप को इतना पैसा जमा करना है फिर आप के नाम बैनामा कर दिया जायेगा, रजिष्ट्री कर दिया जायेगा, इस विषय से मुकदमा चल रहा है वो कहते है कि आप इतना वही इतना दीजिये जैसे कि जो पुराना एग्रीमेन्ट है वही लीजिए।

प्र: तो अभी तक चल रहा है ये ?
ज: अभी तक चल रहा है, जिसका कोई फैसला नहीं हुआ, यही है मामला इसमें।

प्र: आपको नहीं मिला बुनकर कॉलोनी में कोई घर ?
ज: नहीं, ये क्वार्टर में ही हैं।

प्र: अच्छा ये क्वार्टर है ?
ज: जी, यहां तक इसकी जमीन है।

प्र: आगे भी है इसी तरह ?
ज: हां, ये पूरा यहां से बुनकर कॉलोनी है एक नम्बर से लेकर सौ क्वार्टर तक।

प्र: ये कितने में मिला, मतलब आपको इसके लिए कितना जमा करना पड़ा ?
ज: ऐसा है कि इसके लिए अभी हम लोगों को बतला दी नहीं गया, कि इतना मतलब आपको जमा करना है।

प्र: अभी आप लोग ऐसे ही रह रहे हैं ?
ज: अभी ऐसे ही रह रहे हैं, पानी का जमा कर रहे, बिजली का जमा कर रहे, भूमि टैक्स जमा कर रहे हैं।

प्र: मकान का नहीं ?
ज: मकान का नहीं।

प्र: दूसरे ऊपर छत आपको खुद बनवानी है (ऊपर लेन्टर नहीं पड़ा था) या सबमें ऐसे ही है ?
ज: नहीं, बनवाया था दो करघे की जगह एक कमरा रहने के लिए, अब उसके बाद जब परिवार बढ़ गया तो हम लोग अपना-अपना बनवाये, आगे जमीन थी बगीचे के लिए, तो उसमें हम लोगों ने कहा कि अपना मकान बनवाओ, भई रहने के लिए जगह चाहिए, और जो छत बनवाया था, वो तो सीमेन्ट की थी, सीमेन्ट कटकर की और सीमेन्ट कटकर की मियाद पुज गयी, तो झरने लगी, गिरने लगी, तो मजबूरी छत पढ़वाना ही पड़ा।

प्र: तो ये किस आधार पर, जैसे सारे बुनकर को तो क्वार्टर मिला नहीं है ?
ज: नहीं यहां जो बुनकर कॉलोनी के अन्दर जोगरीन है, गरीब बुनकर को मिला हुआ है और यहां अब की पोजीशन ये है कि पूंजीपति यहां घुसते चले जा रहे हें, गरीबी नहीं हटा रहे, गरीब को हटा रहे यहां से, अब ये पोजीशन आ गयी है।

प्र: आप की किसी समिति से जुड़े हैं ?
ज: जी।

प्र: किससे ?
ज: मैं समाज संगठन से जुड़ा हूं, समाज संगठन उत्तरप्रदेश जिला वाराणसी। और अभी सूचना विभाग से भी जुड़ा हूं।

प्र: अच्छा कोई अदाधिकारी है आप समाज संगठन में ?

ज: मैं इस क्षेत्र का शाखा अध्यक्ष हूं।

प्र: आप लोगों का बुनकरों के बीच में काम है या किस तरह का काम है ?
ज: हमारा प्रशासनिक रूप में काम है ये समाज संगठन जितना है ये प्रशासनिय रूप में है।

प्र: जैसे क्या-क्या करते हैं ?
ज: जैसे यातायात में, जैसे बाढ़ पीड़ित या कोई त्योहार आ गयी, उसमें प्रशासनिक हेल्प में हम लोग है, यातायात में भी हम लोग है, जैसे कोई मेला आ गया दुर्गापुजा आ गया, मोहर्रम आ गया, उस पीरियड में या दंगा हो गया....
(बैटरी खत्म होने के कारण इन्टरव्यू बीच में छूट गया)